{ऑडियो कैसेट का 'बी' साइड}

चित्र नं. 4 (सर्व आत्माओं का पिता एक है):-

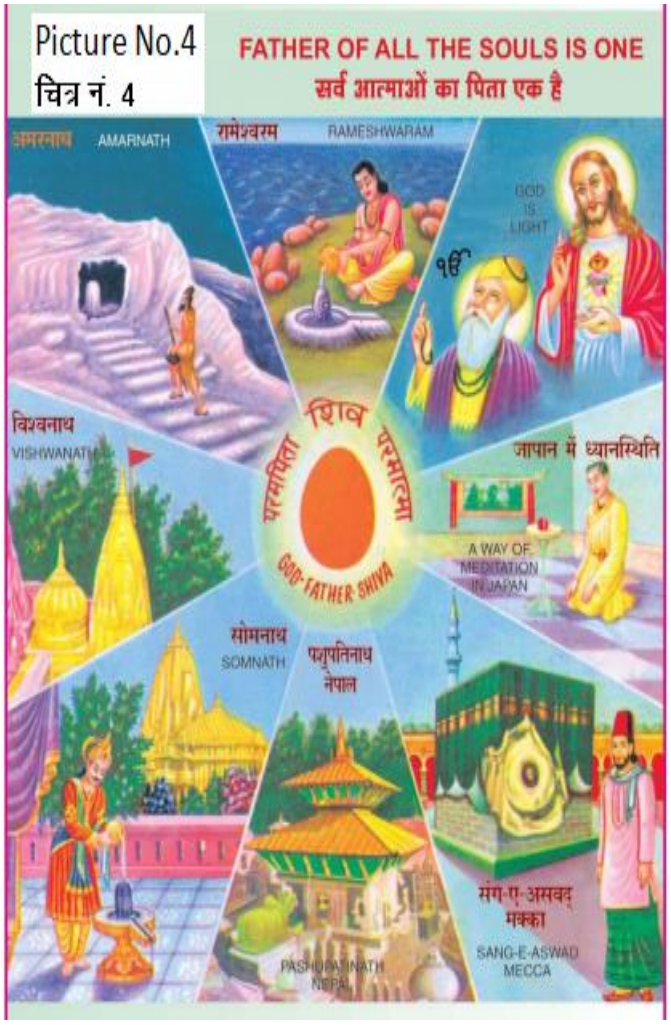

वह तो गॉड फादर है, जिसके अलग-2 नाम-रूप दे दिए हैं; लेकिन अलग-2 नाम-रूप होते हुए भी एक रूप ऐसा है जो हर धर्म में मान्यता प्राप्त करता है। कैसे? अपने भारतवर्ष में ज्योतिर्लिंगम् माने जाते हैं- **रामेश्वरम्** वगैरह। कहते हैं- राम ने भी उपासना की। राम को भगवान मानते हैं; लेकिन उपासना किसकी की? शिव की उपासना की। तो राम भगवान या शिव भगवान? शिव ही हुए। ऐसे ही **गोपेश्वरम्** मंदिर भी बना हुआ है। 'गोप' कृष्ण को कहा जाता है। इससे साबित हो गया कि कृष्ण भी भगवान नहीं थे। वास्तव में उनका भी कोई ईश्वर है, जिन्होंने उनको ऐसा नर से 16 कला सं. बनाया। ऐसे ही **केदारनाथ** है, **बद्रीनाथ** है, **काशीविश्वनाथ** है और यह **सोमनाथ** है। इन सभी मंदिरों में इस बात की यादगार है कि यहाँ उस निराकार ज्योति को ज्योतिर्लिंगम् के रूप में माना जाता है। नेपाल में **पशुपतिनाथ** का मंदिर है। कलियुग के अंत में सभी मनुष्यमात्र पशुओं जैसा आचरण करने वाले हो जाते हैं। उन पशुओं को भी पशु से या राम की सेना बंदरों से मंदिर लायक बनाने वाला वही निराकार शिवबाबा है।

अच्छा, हिन्दुओं की बात छोड़ दीजिए। मुसलमान लोग मक्का में हज़ (तीर्थ यात्रा) करने जाते हैं। वहाँ मुहम्मद ने दीवाल में एक पत्थर लाकर रखा था, उसका नाम उन्होंने **'संग-ए-असवद्'** दिया। अभी भी जब तक मुसलमान लोग उस पत्थर का चुम्बन नहीं कर लेते, सिजदा नहीं माना जाता, उनकी हज़ की यात्रा पूरी नहीं होती। इसका मतलब वे भी आज तक उस निराकार को मानते हैं, हालाँकि वे पत्थर की मूर्तियों को नहीं मानते। वे तो मूर्तियाँ व शिवलिगों को तोड़ने वाले रहे हैं। उन्होंने यहाँ भारत में आकर शिवलिगों को तोड़ा है ; लेकिन वहाँ मानते हैं। बौद्धी लोग आज भी चीन-जापान में देखे जाते हैं कि वे गोल स्टूल के ऊपर पत्थर की बटिया रखते हैं और उसके ऊपर दृष्टि एकाग्र करते हैं। इससे साबित होता है कि वे भी उस निराकार को मानते हैं। गुरूनानक ने तो कई जगह कहा है- **'एक ओंकार निरंकार', 'सद्गुरू अकाल मूर्त।'** वे तो निराकार को मानते ही हैं। ईसाईयों के धर्मग्रंथ बाईबल में तो कई जगह लिखा हुआ है- **'गॉड इज़ लाइट'** अर्थात् परमात्मा ज्योति है। कहने का मतलब यह है कि हर धर्म में उस निराकार ज्योति की मान्यता है। अब यह सवाल पैदा होता है कि जब सब धर्मों में उस एक ही रूप की मान्यता है, तो सब धर्म वाले उस एक ही को परमपिता+परमात्मा का रूप क्यों नहीं मानते ? ये अलग-2 रूप क्यों माने हुए हैं? यह वास्तविकता किसी की बुद्धि में नहीं आ रही है।

वह निराकार ज्योति जब इस सृष्टि पर आती है, तो जो विशेष आत्माएँ, राम-कृष्ण हैं, इन दो को सृष्टि के विनाश और स्थापना के कार्य में मुखिया बनाया गया है। कृष्ण की सोल आखरी जन्म में दादा लेखराज के रूप में भारत के पश्चिम सिन्ध-हैदराबाद में प्रत्यक्ष होती है और उसमें परमपिता+परमात्मा शिव प्रवेश करके पहले 'ब्रह्मा' के रूप में प्रत्यक्ष होकर कार्य करते हैं, माँ के प्यार का पार्ट बजाते हैं। आप कहीं भी, किसी भी ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाएँ, तो आप कोई भी ब्रह्माकुमार-कुमारी से पूछिए कि बाबा ने कभी किसी को टेढ़ी नज़र से देखा या गलत कुवचन कहा या कोई ऐसा है जिसने बाबा के सम्पर्क में पहुँचने के बाद यह अनुभव किया हो कि ब्रह्मा बाबा ने हमको दुःख दिया ? प्रत्येक ब्रह्माकुमार-कुमारी यही कहेगा कि बाबा भले 10 मिनट के लिए मिले हों; परन्तु बाबा ने हमको जितना प्यार दिया, उतना दुनिया में हमें किसी से अनुभूति नहीं हुई। वे थे प्यार की प्रतिमूर्ति ब्रह्मा बाबा। जैसे अभी भी टी०वी० में सीरियल आते हैं, आप देखते होंगे कि असुरों ने वरदान ले लिए हैं, असुर है लेकिन फिर भी माँ से वरदान ले लिया। वास्तव में वह एक रूप दिखाया गया है और इनके ठीक विपरीत एक दूसरा रूप राम वाली आत्मा है, जिसमें कलियुग के अंत में परमपिता+परमात्मा प्रवेश करके जगत्पिता **'शंकर'** के नाम-रूप से प्रख्यात होते हैं। देखो, जैसे इन कृष्ण का नाम-रूप प्रख्यात हुआ है **'ब्रह्मा'**, वैसे उन राम का नाम-रूप प्रख्यात होता है **'शंकर'**। इन दोनों ही शक्तियों की सहयोगी शक्ति दो आत्माएँ भी हैं। कृष्ण की सहयोगी शक्ति है **'राधा'** और राम की सहयोगी शक्ति है **'सीता'**। इनके वर्तमान रूप के नाम पड़ते हैं ब्रह्मा की सहयोगी शक्ति 'सरस्वती' और शंकर की सहयोगी शक्ति 'पार्वती'। ये वर्तमान प्रैक्टिकल स्वरूप के नाम हैं। जब कलियुगी दुनिया समाप्त होती है, नई सतयुगी सृष्टि रची जाती है, तो चारों आत्माओं के स्वभाव-संस्कारों का सम्मिश्रण विष्णु रूप होता है। अभी तो हर घर में स्त्री-पुरुष के संस्कार आपस में टकराते हैं। कोई घर ऐसा नहीं होगा जिसमें संस्कार टकराएँ नहीं; लेकिन सबसे पहले एक ऐसी भी दुनिया परमपिता+परमात्मा ने बनाई थी कि पहले-2 चार आत्माओं के संस्कार मिलकर एक हो गए थे। वे ये आत्माएँ हैं, जो सृष्टि में पहले-पहले वैकुण्ठवासी हैं और इन आत्माओं का संस्कार-मिलन विष्णु की भुजाओं के रूप में दिखाया गया है। कहते हैं ना , 'मेरे भैया ने शरीर छोड़ दिया, मेरी दाहिनी भुजा टूट गई।' तो दाहिनी भुजा थोड़े ही टूट गई, बल्कि जो सहयोगी आत्मा है, वह चली गई।

जो दो रूप हैं शंकर और पार्वती-आदिशक्ति, चामुंडा का रूप धारण करती हैं और शंकर, प्रलयंकर रूप धारण करते हैं। वह राम (शंकर) वाली आत्मा महाकाली रूपा सहयोगिनी शक्ति द्वारा प्रलय मचाती है। शक्ति का रूप धारण किए बगैर रावण, कुम्भकरण, मेघनाद जैसे असुर परिवर्तन नहीं हो सकते। इन ब्राह्मणों के अन्दर ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में ऐसे आसुरी तत्व घुस गए, जो आसुरी पार्ट ही बजाते हैं। उनको सुधारने के लिए ज्ञान बाण मारने वाली राम की आत्मा शंकर के नाम से तैयार होती है। बाण कोई हिसक नहीं हैं। परमपिता+परमात्मा ने आकर राम के मुख द्वारा उनके लिए जो ज्ञान की तीखी बातें बोली हैं, उन बातों का गहरा अर्थ ही ज्ञान-बाणों का काम करता है। हमको तो वे महावाक्य प्यारे लगते हैं ; लेकिन उस तरह की जो आसुरी ब्राह्मण आत्माएँ परिवार में घुसी हुई हैं, उनको वे हिसक बाण लगते हैं। उनको हृदय में घाव पैदा कर देते हैं। तो इस तरीके से ये जो मात-पिता के लव और लॉ के दो रूप हैं, उनमें यह तीसरा रूप समाया हुआ है, जो ब्रह्मा-सरस्वती, शंकर और पार्वती रूपी चार आत्माओं का सम्मिश्रण ही **'विष्णु'** कहा जाता है। बाकी ऐसा कोई व्यक्ति संसार में कभी हुआ नहीं है जो चार भुजाओं का रहा हो या 10 सिर का रावण रहा हो। 10 सिर के रावण का मतलब है कि सतयुग से कलियुगान्त तक दसों धर्म मिल करके सारे संसार में रावण के संगठित 10 सिरों का प्रजातंत्र राज्य का ऐसा बेकायदे संगठन बनाते हैं, जिससे सारी दुनिया विनाश के कगार पर खड़ी हो जाती है। बाकी परमपिता+परमात्मा ने तो आकर राजयोग सिखाकर कायदेसिर दैवी राजाओं का राज्य स्थापन किया था।

परमपिता+परमात्मा जो आध्यात्मिक विश्वविद्यालय खोलते हैं, तो जगद्गुरु कहे जाते हैं, तो ज़रूर वे ऐसी ईश्वरीय यूनिवर्सिटी का वाइस चान्सलर बनते होंगे, जहाँ वे कोई माला रूपी संगठन की विश्व में बड़ी-2 पदवियाँ

देकर जाते हो। देश-विदेश में जन्म-जन्मांतर के जो राजाएँ बने हैं, उन आत्माओं को राजाई करने की विद्या उन्होंने ही सिखाई थी। उसको **'राजयोग'** कहा जाता है। वह राजयोग बेहद का परमपिता+परमात्मा गीता-ज्ञान के द्वारा अभी भी सिखा रहे हैं, जन्म-जन्मांतर का राजा बना रहे हैं। लौकिक हद के बाप जो होते हैं, वे तो एक जन्म की प्राप्ति कराते हैं, वर्सा देते हैं; लेकिन यह पारलौकिक बाप जब सृष्टि पर आते हैं तो अपने आत्मा रूपी बच्चों को अनेक जन्मों की राजाई देकर जाते हैं। वह अनेक जन्मों की राजाई अभी दी जा रही है। संसार में अभी कुछ ही वर्षों में ऐसी 108 श्रेष्ठ आत्माएँ प्रत्यक्ष होने वाली हैं, जो सारे संसार में तहलका/खलबली मचाएँगी और सारे संसार की धर्म सत्ता व राज्य सत्ता, दोनों की बागडोर अपने हाथ में ले लेंगी। यही 108 श्रेष्ठ आत्माएँ आज भी सभी धर्मों में माला के रूप में स्मरण की जाती हैं।

जब सारी दुनिया माया के पंजे में फँस जाती है, तब वे चेतन ज्ञानसूर्य परमपिता+परमात्मा इस सृष्टि पर आते हैं। माया का पंजा कोई स्त्री नहीं है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार- ये पाँच विकार मनुष्य के अन्दर भरे हुए हैं। उन पाँचों विकारों में सारी दुनिया जकड़ गई है। आज एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो इन पाँचों विकारों की जकड़ से बाहर हो। जब सारी सृष्टि की ऐसी अत्यधिक बदतर हालत हो जाती है तब परमपिता+परमात्मा शिवबाबा आते हैं, जिसकी यादगार में यह **'महाशिवरात्रि'** मनाई जाती है। इस महाशिवरात्रि में जब परमपिता+परमात्मा शिव आते हैं तो दुनिया में चारों तरफ अनेक धर्म फैले हुए होते हैं। उन धर्मों में धर्म के नाम पर वितंडावाद ज़्यादा है, ज्ञान कुछ भी नहीं है। ज्ञान के नाम पर अज्ञान -ही-अज्ञान सुनाया जाता है और पैसे व दिखावे को ज़्यादा महत्व दिया जाता है, जो धर्म की स्थापना का कार्य है, धारणा की बातें हैं, वे न के बराबर होती हैं। तब ज्ञानसूर्य परमपिता+परमात्मा इस सृष्टि पर आकर उस अज्ञान-अंधकार का विच्छेदन करते हैं। इसलिए उसकी यादगार में भारतवर्ष में माघ मास को अर्धरात्रि में महाशिवरात्रि मनाई जाती है। जब आख़िरी मास होता है, सृष्टि का आख़िरी टाइम होता है, कलियुग का अन्त होना होता है, तब दुनिया में अज्ञान-अंधकार चारों तरफ फैला रहता है। जैसे शक्तिमान सीरियल में आता है- **'अंधेरा कायम रहेगा'**। असुर तो यही चाहते हैं कि देह-अहंकार का अंधेरा कायम रहे, दुनिया अज्ञान में रहे और हम अपना काम -क्रोधादि की इन्द्रियों से आसुरी काम बनाएँ।

तो ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं असुर, जिनका मुखिया है काम विकार। उस काम विकार को परमपिता+परमात्मा आकर सबसे पहले शंकर के चोले के द्वारा ही भस्म कराते हैं। हमने समझ लिया कि काम विकार कोई देवता का रूप होगा। उसको **'कामदेव'** नाम दे दिया; लेकिन वास्तव में वह कोई अलग से देवता नहीं होता। यह हमारे अन्दर की ही कुप्रवृत्ति, कमज़ोरी व विकृति है जो अपने अंदर से उस शंकर देव ने पहले भस्म की थी। भस्म करने वालों में नम्बरवार होते हैं; लेकिन जो उसको सबसे पहले भस्म कर लेता है, वह बात शंकर के लिए दिखाते हैं। उनका ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला और काम विकार भस्म हो गया। वह कोई बाहर का काम विकार थोड़े ही था। यह तो आत्यंतिक तामसी कलियुग में उनके अंदर की ही चीज़ थी जो उन्होंने भस्म कर दी, नष्ट कर दी। जब मुखिया भस्म होगा तो बाकी ये जो चार चोर-डकैत हैं, वे तो अपने-आप ही भाग जाएँगे।